International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-6, Issue-6 Nov-Dec- 2019
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

श्रीराम शर्मा आचार्य एवं सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों में समानता

शोधार्थी
प्रदीप कुमार

शोध निर्देशक
डॉ0 प्रवीन कुमार

प्रस्तावना

आचार्य श्री रामशर्मा एवं सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त दार्शनिक ही नहीं अपितु महान शिक्षाशास्त्री भी थे। अपनी बहुमुखी प्रतिभा, अध्ययन प्रवृत्ति और प्रभावकारी व्यक्तित्व के कारण शिक्षा के क्षेत्र में भी उतना ही विवेकपूर्ण योगदान किया जितना भारतीय दर्शन की धारा को विश्व में प्लावित करने अथवा जगत की अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं के समाधान में किया वे उन समकालीन भारतीय दार्शनिकों में से एक थे जिन्होंने शिक्षक के रूप में शिक्षा की समस्याओं को निकट से देखा ओर समझा। विभिन्न भारतीय और पाश्चात्य विश्वविद्यालयों में आचार्य के रूप में कुलपति के रूप में और विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने शिक्षा के लक्ष्य और शिक्षा की विविध समस्याओं पर गम्भीर अध्ययन किया, विश्लेषण किया और मूल्यांकन किया। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों में और समय–समय पर उनके द्वारा दिए गए अीिभाषणों में शिक्षा के स्वरूप, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, अनुशासन, छात्र–शिक्षक सम्बन्ध, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा, नारी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा के विभिन्न आयामों पर अत्यन्त प्रबुद्ध चिन्तन देखने को मिलता है।

दोनों दार्शनिकों के विचारों के आधार पर शैक्षिक विचार इस प्रकार हैं :–

शिक्षा का अर्थ–

श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन के अनुसार सद्इच्छा, सद्भाव का प्रसार ही शिक्षा है। तकनीकी ज्ञान शिक्षा का प्रधान अंग कभी नहीं होना चाहिए, वह गौण रहना चाहिए। मानवीय मूल्यों की स्थापना ही शिक्षा का केन्द्रीय तत्व है। तकनीकी ज्ञान से उपार्जित वस्तुएँ जीवन यापन का साधन हो

सकती है, साध्य नहीं। साध्य तो मनुष्य स्वयं हैं। इस साध्य की प्राप्ति के लिए ही शिक्षा उसका एक शस्त्र है, एक साधन है।[1]

आचार्य जी के अनुसार जो शिक्षा हमारे श्रेय को पुष्ट करती है, विवेक को सशक्त बनाती है, जीवन में प्राणदायी तत्व भरती है हमारे लिए इष्ट है। यज्ञ पूर्ण जीवन शिक्षा का उद्देश्य है, यज्ञ शून्य जीवन ही अशिक्षित और असंस्कृत जीवन है। यही पशुता है, पशु तो पशु है ही, अशिक्षा मनुष्य को भी पशु बना देती है जबकि सच्ची शिक्षा मनुष्य को अपने ही पशु पर योग्य सवार बना देती है।[2]

आचार्य जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ सभी विषयों का पूर्ण ज्ञान तो नहीं है पर इतना अवश्य है कि व्यक्ति समाज के अन्य सदस्यों के साथ–साथ कदम मिलाकर चल सके। इसलिए सभ्यता के विकास के साथ–साथ शिक्षा व्यक्ति को अपने समाज के साथ जीना भी सिखाती है। व्यक्ति में बाहरी दुनिया को समझने की क्षमता केवल शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। दूसरों की क्षमताओं और उपलब्धियों से सीखकर स्वयं को किस प्रकार विकसित किया जाये, इनका मार्ग शिक्षा ही सुझाती है।

डॉ0 राधाकृष्णन ने शिक्षा को अत्यन्त व्यापक रूप में लिया है। उन्होंने शिक्षा को जीवन के लिए आवश्यक माना है लेकिन जीवन के आध्यात्मिक विकास पर अधिक बल दिया है। उनका कहना है कि जब हम किसी क्षेत्र में संघर्ष करते हैं तो सर्वप्रथम हमें शिक्षा की ही आवश्यकता पड़ती है। शिक्षा ही मनुष्यों को भौतिक वातावरण की शक्तियों से संघर्ष करने के लिए समर्थ बनाती है जिससे वह निर्धनता को समृद्धि में बदल सके। शिक्षा ही व्यक्ति को आन्तरिक संघर्ष पर विजय प्राप्त करने के योग्य बनाती है। जिससे वह अपनी हीन प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर सकें। वे शिक्षा को ज्ञान तथा कौशल के विकास के लिए ही आवश्यक नहीं मानते वरन् जीवनयापन की कला में दीक्षित करने के लिए भी अनिवार्य मानते हैं। उनके अनुसार हम शिक्षक से, स्वयं से तथा जीवन और उनके अनुभवों से भी सीखते हैं। शिक्षा वस्तुतः एक अनौपचारिक अवधारणा नहीं है वरन् सम्पूर्ण जीवन अनुभव है, इस कारण वह शिक्षा है। इस प्रकार डॉ0 राधाकृष्णन जीवन को शिक्षा के रूप में देखते हैं। डॉ0 राधाकृष्णन के अनुसार, 'शिक्षा की आवश्यकता मुक्ति

[1] पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, वाङमय 49, शिक्षा एवं विद्या, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, पृष्ठ 1.11
[2] वहीं,

प्राप्ति के लिए, अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए, उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए, व्यक्तित्व के विकास के लिए, सहयोगी जीवन यापन के लिए, नैतिक गुणों के विकास के लिए, मानव हृदय को दया, प्रेम, सहकार आदि भावों से आपूरित करने के लिए, प्रज्ञा से अन्तःप्रज्ञा के आधार के रूप में प्रशिक्षित करने के लिए, सामूहिक जीवन में अपनी भूमिका के निर्वहन के लिए और आत्म–ज्ञान की प्राप्ति के लिए है।

शिक्षा के उद्देश्य

आचार्य जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य अच्छी, ऊँची और आराम की नौकरी प्राप्ति नहीं होना चाहिए। शिक्षा को विशुद्ध रूप से ज्ञान सम्वर्द्धन तथा व्यक्तित्व के विकास की आवश्यकता पूरी करने के लिए प्राप्त किया जाये। शिक्षा की सार्थकता तभी है, जब वह शिक्षार्थी को मानवी गरिमा के अनुरूप सत्वृत्तियों से अभ्यस्त करा सकें।[3]

आचार्य जी कहते हैं कि शिक्षा समाज के उत्थान का एक प्रमुख साधन है। व्यक्ति शिक्षा के लिए नहीं बल्कि शिक्षा व्यक्ति के लिए है इसलिए सभी के लिए शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए और वह भी व्यवहारिक हो जिससे व्यक्ति स्वयं के उत्थान के साथ–साथ समाज व राष्ट्र को विकास पथ पर अग्रसर करने में सहायक बन सके। शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर ज्ञान नहीं है और न ही प्राचीन काल से चली आ रही व्यवस्था एवं अनुभवों को स्मरण करना मात्र ही है। वर्तमान समय की परिस्थितियों के अनुसार एवं व्यक्ति, समाज व राष्ट्र की आवश्यकतानुसार शिक्षा प्रदान की जाये।

इसके अतिरिक्त शारीरिक विकास, चारित्रिक विकास, आध्यात्मिक विकास, व्यक्तित्व विकास, सद्गुणों का विकास, सांस्कृतिक विकास यथार्थता का ज्ञान, चित्तवृत्तियों का परिशोधन, सुसंस्कारिता का संवर्धन तथा नैतिक मूल्यों का विकास भी शिक्षा के उद्देश्यों में महत्वपूर्ण पक्ष माने।

डॉ0 राधाकृष्णन का विश्वास था कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र के निर्माण तथा पुनर्निर्माण का एक शक्तिशाली साधन है। शिक्षा केवल अपने समय के नागरिकों को ही प्रभावित नहीं करती अपितु भावी पीढ़ियों पर भी अपनी छाप छोड़ती है। डॉ0 राधाकृष्णन जैसे युगदृष्टा चिन्तक के मस्तिष्क में यह समस्या विद्यमान

[3] पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, वाङमय 49, शिक्षा एवं विद्या, अखण्ड जयोति संस्थान, मथुरा, पृष्ठ 1.15/1.16 ।

थी कि बालकों को किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे वे भारत के गौरव को पुनः स्थापित कर सकें। उन्होंने शिक्षा के अंकुर को भारतीय परिवेश में सिंचित और पल्लवित किया। उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण में भौतिक दृष्टिकोण के स्थान पर आध्यात्मिक उन्नयन को प्रमुख स्थान दिया। उनके अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

ज्ञान का अर्जन, ज्ञान का रूपान्तरण, अर्न्तदृष्टि का विकास, आध्यात्मिक उन्नयन, चारित्रिक उन्माय, वैज्ञानिक मस्तिष्क का निर्माण, सच्ची धार्मिकता की भावना, लोकतन्त्र का संरक्षण, राष्ट्रवाद की भावना एवं विश्वबन्धुत्व की भावना।

पाठ्यक्रम

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी के अनुसार पाठ्यक्रमों पर यदि दृष्टि डाली जाये तो प्रतीत होता है कि उसमें संसार भर की आवश्य–अनावश्यक जानकारियाँ भरी हुई हैं। उनमें से अधिकांश ऐसी हैं जिनका व्यवहारिक जीवन में कदाचित ही कुछ काम करना पड़ता है। देश–देशान्तरों के भूगोल, इतिहास, संविधान पढ़ने–पढ़ाने की अपेक्षा तो यह कहीं अधिक अच्छा था कि अपने ही देश–क्षेत्र और प्रान्तों की स्थिति, संस्कृति भाषा आदि पढ़ाने को प्रमुखता दी जाती, जिससे आवश्यकतानुसार कहीं जाने–पढ़ने की स्थिति में वहाँ फिट होने में कोई काम–व्यवस्था चलाने में सहायता मिलती।[4]

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी के अनुसार पाठ्यक्रम में सामान्य ज्ञान के अतिरिक्त सफाई, स्वास्थ्य रक्षा, मानसिक संतुलन, परिवार संचालन, समाज व्यवहार जैसे विषयों को भी पाठ्यक्रम के साथ इस प्रकार गूँथा जाये, जिससे भाषा, गणित, इतिहास आदि की जानकारी प्राप्त करते हुए जीवन विकास की सम्भावनाएँ विकसित हो सकें।[5]

आचार्य द्वारा स्थापित देव संस्कृति विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रमों की विषयवस्तु इस ढंग से तैयार की गयी कि उसकी राष्ट्रीय और सामाजिक उपयोगिता है। चिकित्सालय प्रबन्धन, देवालय प्रबन्धन, ग्राम प्रबन्धन,

[4] पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य, वाङमय, 49, शिक्षा एवं विद्या, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा, पृष्ठ 1.22
[5] वही

विद्यालय प्रबन्धन, सांस्कृतिक प्रबन्धन ऐसे ही कुछ पाठ्य विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है जिन्हें पढ़कर न केवल स्वावलम्बी होने के अवसर उपलब्ध होते हैं बल्कि जीवन में कुछ सार्थक कर पाने की गौरवमयी अनुभूति भी होती है। इन पाठ्यक्रमों का स्वरूप ऐसा बनाया गया है कि विद्यार्थियों में स्वहित के साथ राष्ट्रहित, मानवहित एवं विश्वहित की भावना भी जाग्रत होती है।

डॉ0 राधाकृष्णन ने शिक्षा के जो उद्देश्य बताये हैं उन्हें प्राप्त करने के लिए उन्होंने विस्तृत पाठ्यक्रम की रचना की है। उन्होंने पाठ्यक्रम के तीन कार्य बताये हैं–पाठ्यक्रम का प्रथम कार्य औपचारिक शिक्षा देना है क्योंकि पाठ्यक्रम के द्वारा ही छात्रों की विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान और अनुभव प्राप्त कराया जा सकता है। पाठ्यक्रम का द्वितीय कार्य जनतन्त्रीय सुधारों के अनुकूल शिक्षा देना है। इस शिक्षा के द्वारा ही छात्रों को स्वतन्त्र विचार, विवेचना और रचनात्मक कार्यों के लिए तैयार किया जा सकता है और पाठ्यक्रम का तृतीय कार्य छात्रों को उनकी अभिरूचि और अभियोग्यता के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना है। डॉ0 राधाकृष्णन का कहना है कि पाठ्यक्रम की रचना छात्रों की आवश्यकताओं और रूचियों के अनुसार की जानी चाहिए। पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो छात्रों का सामाजिक जीवन सम्बन्ध स्थापित कर सकें और उनमें राष्ट्रीयता तथा अर्न्तराष्ट्रीयता की भावना का विकास कर सकें। पाठ्यक्रम छात्रों में आदर्शों, मूल्यों और चारित्रिक उन्मया का विकास करने वाला होना चाहिए।

डॉ0 राधाकृष्णन एकीकृत पाठ्यक्रम में समर्थक हैं। वह विज्ञान और आध्यात्म में समन्वय चाहते हैं। इसलिए वे तकनीकी विषयों के साथ–साथ मानवीय विषय को भी महत्व देते हैं। उनके अनुसार किसी एक पक्ष का विशिष्ट ज्ञान देने से मानव के व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास सम्भव नहीं है।

डॉ0 राधाकृष्णन यह मानते हैं कि प्रत्येक छात्र को उस भौतिक जगत के विषय में ज्ञान होना चाहिए जिसमें वह रहता है। इसी प्रकार उसे यह भी ज्ञान होना चाहिए, कि तकनीकी किस प्रकार संसार के निर्माण में सहायक हो रही है और हमारे पर्यावरण का रूपान्तरण कर रही है लेकिन यह भी मानते हैं कि मानविकी अध्ययन के बिना तकनीकी शिक्षा अपूर्ण, अपर्याप्त और एक पक्षीय रहेगी। छात्रों को सभ्य और सुसंस्कृत जीवन की कलाओं में निपुण होना चाहिए। मानविकी अध्ययन और तकनीकी अध्ययन पर एक दूसरे के पूरक

होने चाहिए। सामाजिक अध्ययन मानव विकास एवं सामाजिक नियमों का निर्माण करने में सहायक होता है। इसके द्वारा छात्रों को कर्त्तव्यों और अधिकारों के विषय में जागरूक किया जाना चाहिए। उन्हें बताया जाना चाहिए कि उनका कर्त्तव्य राष्ट्र के प्रति सबसे अधिक है। वे कहते हैं किसी राष्ट्र की महानता का पता इससे लगाया जा सकता है कि कितने लोगों को अक्षर ज्ञान है इसका अनुमान उस राष्ट्र के विज्ञान और विद्या की समृद्धि के योगदान से लगाया जा सकता है।

डॉ0 राधाकृष्णन ने तकनीकी शिक्षा को मान्यता प्रदान की है किन्तु मात्र मशीनीकरण से मानवीय सभ्यता का उच्च स्तर बनाए रखना असम्भव है। मानवता के उच्च स्तर के लिए नैतिक नियम मूल्यावान है। मशीनीकरण के साथ–साथ मानवीय मूल्यों की शिक्षा मशीनों के सदुपयोग के लिए आवश्यक है।

शिक्षक

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने शिक्षक को राष्ट्र का सच्चा एवं सर्वश्रेष्ठ पथ प्रदर्शक एवं समाज की रीढ़ माना है। उनके अनुसार अध्यापक का व्यक्तित्व एवं आदर्श अनुकरणीय होना चाहिए तथा उसका स्वरूप एक वात्सल्यपूर्ण अभिभावक के समान होना चाहिए। शिक्षक के पद पर चरित्रवान, संकल्पवान अपनी संस्कृति एवं राष्ट्र से प्रेम करने वाले, मानवमात्र की वेदना को अनुभव करने में समर्थ, विषय के ज्ञाता व्यक्तियों को ही विभूषित किया जाना चाहिए।

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी कहते हैं कि शिक्षक अपने आदर्श व्यवहार, चरित्र, व्यक्तित्व की छाप अपने सानिध्य में रहने वाले बालकों पर छोड़ता है, इसलिये शिक्षक भी एक आदर्श शिक्षक होना चाहिए। गुरू ही अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाने वाला नाविक है, मार्गदर्शक है, उसे तो हर कीमत पर अपने कर्त्तव्य को निभाना चाहिए।

आचार्य जी के अनुसार आज के अध्यापक को अपनी गरिमा और जिम्मेदारी अधिक गम्भीरता से समझनी चाहिए। शिक्षा के साथ सुसंस्कारिता जोड़ने के लिए प्राणपण से प्रयत्न करना चाहिए, अन्यथा शिक्षा की उपेक्षा और शिक्षकों की अवज्ञा का जो माहौल चल पड़ा है वह बढ़ता ही जायेगा। केवल अध्यापक ही ऐसा वर्ग है जो नई पीढ़ी को न केवल शिक्षित साक्षर बनाता है वरन् अपनी शिक्षक स्थिति के कारण उन्हें

सुसंस्कृत भी बना सकता है। यदि छात्रों को अध्यापकगण आत्मीयता की जंजीर में जकड़े रहे तो वे भी रस्सी छुड़ाकर भागने और मनमानी करने की धृष्टता धारण न करेंगें।

डॉ0 राधाकृष्णन सन्तुलित एवं सुव्यवस्थित और सुनियोजित पाठ्यक्रम की अपेक्षा करते हैं। इस कार्य में शिक्षकों का योगदान भी अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। उनके शब्दों में 'संवेदनशील शिक्षकों को छात्रों की मानसिक क्षमताओं की, चाहे वे विचारात्मक हो या कलात्मक या क्रियात्मक, खोज करने में समर्थ होना चाहिए। यदि छात्र में विचारात्मक पक्ष प्रबल है तो यह ज्ञात करना होगा कि वह दार्शनिक मेधा रखता है या वैज्ञानिक या गणितीय या भाषा सम्बन्धी मेधा। यदि छात्र कलात्मक अभिरूचि रखता है तो शिक्षक को यह देखना होगा कि उसकी रूचि साहित्य में है या संगीत में या चित्रकला में या मूर्तिकला में। यदि छात्र की अभिरूचि क्रियात्मक कार्यों में है तो शिक्षक को यह पता लगाना होगा कि वह कुशल और दक्ष प्रयोगकर्त्ता है अथवा यान्त्रिकीय मस्तिष्क वाला है। ये विभिन्न प्रवृत्तियाँ माध्यमिक स्तर पर खोजी जा सकती हैं और यदि विद्यार्थियों को उचित निर्देशन प्रदान किया जाये तो भविष्य में होने वाले अपव्यय को रोका जा सकता है। यही कारण है कि डॉ0 राधाकृष्णन यह विश्वास करते हैं कि माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के लिए पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों के चयन पर समान महत्व दिया जाना चाहिए। इन विद्यालयों से यह आशा की जाती है कि वे छात्रों को विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान करेंगें।'

निष्कर्ष

आज की विषम परिस्थितियों में शिक्षा व्यवस्था एक प्रमुख चुनौती है। भारत के सभी शिक्षाविद् एक मत से स्वीकार रकते हैं कि हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल नहीं रही है। अतः सभी स्तरों पर शिक्षा व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन की आवश्यकता प्रतीत होती है। ऐसा लगता है हमारी शिक्षा नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों से सर्वथा शून्य हो गयी है। छात्रों में व्याप्त असंतोष, क्षोभ, कुण्ठा, दिशाहीनता, निराशा, मर्यादाहीनता, विद्रोहात्मक प्रवृत्तियाँ और विध्वंसक क्रियाकलापों से आज हमारा देश आक्रान्त है। शिक्षा से समाज की अपेक्षायें अधूरी और निराशाजनक हैं। अतः शिक्षा के ग्रहणकर्त्ताओं की नकारात्मक प्रतिक्रियाओं से उभरा असंतोष सामाजिक धरातल पर उबल रहा है। अनुशासनहीनता, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक पतन, मूल्यों का ह्रास, सामाजिक तनाव, भ्रष्टाचार, धर्मान्धता, साम्प्रदायिकता, जातीयता,

सांस्कृतिक–क्षरण, राष्ट्रीय एकता का अभाव, विश्वयुद्ध की आंशका, अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सद्भाव की समस्या, शिक्षक–शिक्षार्थी दोनों के कर्त्तव्यों का ह्रास, प्रशासनिक शिथिलता तथा उत्तरदायित्व का अभाव आदि समस्यायें हमारी आज की शिक्षा के लिए बड़ी चुनौतियाँ हैं। ऐसी अव्यवस्था और अराजकता की स्थिति में आचार्य जी एवं सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन जी का शिक्षा दर्शन हमारी सहायता कर सकता है। आचार्य जी एवं सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन जी के शैक्षिक उद्देश्यों सम्बन्धी विचार आज की सामाजिक परिस्थिति में बहुत ही प्रासंगिक हैं।

वर्तमान समय में विद्यार्थी समुदाय में व्याप्त असंतोष, कुण्ठा, भग्नाशा, निराशा और ध्वंसात्मक विद्रोहात्मक प्रवृत्तियों से केवल हमारा देश ही आक्रांत नहीं है वरन् विश्व के अनेक राष्ट्र इस संक्रामक रोग से विकलांग हैं। आज चारों ओर जो हिंसात्मक कार्य हो रहे हैं उस सब में विद्यार्थी वर्ग सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। हमारे देश में तो छात्र अनुशासनहीनता का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। अतः आज इस बात की आवश्यकता है कि इस समस्या का अध्ययन किया जाये और इसके मूल कारणों को समझकर निराकरण के लिए उचित कदम उठाये जायें। इस सम्बन्ध में आचार्य जी के विचार बहुत ही सार्थक प्रतीत होते हैं।

यदि हम आचार्य जी एवं सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन जी के द्वारा सुझाये गये शिक्षा सम्बन्धी, शिक्षक सम्बन्धी, अनुशासन सम्बन्धी, स्त्री शिक्षा सम्बन्धी, माता–पिता सम्बन्धी, शिक्षण विधियाँ सम्बन्धी एवं पाठ्यक्रम सम्बन्धी महत्वपूर्ण विचारों पर सकारात्मक रूख अपनाकर शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग करने का प्रयास करते हैं, तो निःसन्देह यह शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा प्रदान करने का सफल आयाम सिद्ध होगा।

शोध ग्रन्थ सूची

- आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा, शिक्षा एवं विद्या, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा।
- आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (2010) शिक्षा ही नहीं विद्या भी, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।
- आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (2003) बच्चो की शिक्षा ही नहीं दीक्षा भी आवश्यक, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

- आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (2007) एक समानान्तर शिक्षा तंत्र, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।
- आचार्य पं0 श्रीराम शर्मा (2006) सार्थक एवं समग्र शिक्षा का स्वरूप, युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।